International Journal of Research inSocial Science
Vol. 12 Issue 04, April 2022,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शांति शिक्षा में बौद्ध के शौक्षिक दर्शन की भूमिका

सरिता कुमारी, शोधार्थी, शिक्षा संकाय, आई आई एम टी विश्वविद्यालय, मेरठ

डा संजीव कुमार, शोध निर्देशक, प्रोफेसर कालेज ऑफ एजुकेशन, आई आई एम टी विश्वविद्यालय, मेरठ

सार

बौद्ध दर्शन के शैक्षिक दर्शन का लक्ष्य ज्ञान प्रदान करना है। बौद्ध दर्शन को पूर्ण परम ज्ञान के रूप में जाना जाता है। बुद्ध ने हमें सिखाया कि परम ज्ञान प्राप्त करना हमारे अभ्यास या साधना का मुख्य उद्देश्य होता है। उन्होंने हमें आगे सिखाया कि प्रत्येक व्यक्ति में परम ज्ञान की इस स्थिति को अनुभूत करने की क्षमता है, क्योंकि यह हमारी प्रकृति का एक आंतरिक हिस्सा है, न कि कुछ ऐसा जो कोई बाहरी रूप से प्राप्त करता है। यह शोध–पत्र शांति शिक्षा के सन्दर्भ में शांति के प्रति बौद्ध दृष्टि का एक दृष्टिकोण प्रदान करता है। पहले खंड में शांति की शर्तों और शांति के इसके विभिन्न दृष्टिकोणों पर प्रकाश डाला गया है। इसके बाद बौद्ध धर्म की प्रमुख बुनियादी बातों और शांति और संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में इसके योगदान की जांच की गई है। अंतिम खंड में शांति निर्माण के प्रयासों और आज के विश्व में शांति की संस्कृति को बढ़ावा देने में बौद्ध योगदान की संभावनाओं की पड़ताल की गई है। किसी भी प्रकार के विवाद को रोकने के लिए बुद्ध किसी भी समुदाय के लिए सौहार्द के आठ सिद्धांत सिखाते हैं। जहां तक अंतर–समूह या अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों का प्रश्न है, बौद्ध धर्मग्रंथ अहिंसक हस्तक्षेप की शिक्षा देने वाली कहानियों से भरे हुए हैं। यह लेख बौद्ध धारणा और इसकी दृष्टि को भी इसके मूल रूप में प्रस्तुत करता है ताकि सभी के साथ.साथ मन में शांति का भाव उत्पन्न हो सके।

मुख्य भाब्दः धर्मग्रंथ अहिंसक, बौद्ध शिक्षा, बौद्ध दृष्टि, शांति

परिचय

बौद्ध धर्म सबसे प्राचीन दर्शन में से एक है, और इसकी शिक्षाओं का आज भी अनुसरण किया जाता है। विश्व भर में बौद्ध धर्म के बहुत से अनुयायी हैं। बौद्ध शिक्षा दर्शन में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा के निहितार्थ बौद्ध लोगों के जीवन में एक सशक्त भूमिका निभाते हैं, यह आवश्यक है कि हम बौद्ध शिक्षा की विशेषताओं और बौद्ध शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका को समझें। बौद्ध शिक्षकों के पास अपनी शिक्षा प्रदान करने की अनेक विधियाँ हैं। बौद्ध दर्शन, गौतम बुद्ध की शिक्षाओं पर आधारित है। गगौतम बुद्ध का जन्म छठी शताब्दी में कपिलवस्तु परिवार में एक शाही परिवार में हुआ था। बौद्ध शिक्षा प्रणाली (200B.C. से 200 A.D.) की स्थापना भगवान गौतम बुद्ध ने की थी। गौतम बुद्ध मुख्य रूप से एक नैतिक शिक्षक और सुधारक और एक दार्शनिक थे। वह मुख्य रूप से जीवन की समस्याओं से चिंतित थे। उन्होंने आध्यात्मिक प्रश्न की चर्चा का समर्थन नहीं किया क्योंकि आध्यात्मिक प्रश्न नैतिक रूप से व्यर्थ और बौद्धिक रूप से अनिश्चित हैं। उन्होंने हमेशा

दुख के सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों, इसकी समाप्ति और इसके निरोध की ओर ले जाने वाले मार्ग पर चर्चा की। बुद्ध के दर्शन को 'त्रिपिटक' के रूप में संक्षिप्त रूप से इस प्रकार वर्णित किया गया है– **विनयपिटक**– आचरण के नियम, **सुत्तपिटक** – बुद्ध का उपदेश, और **अभिधम्मपिटक**– दार्शनिक सिद्धांतों की व्याख्या। बुद्ध ने सभी को शिक्षा प्रदान करने का समर्थन किया। बहुत से लोग बौद्ध शिक्षा प्रणाली में स्थानांतरित हो गए। यह भारत में पहली बार था कि बौद्ध आंदोलन के दौरान शिक्षा को वृहद स्तर पर संस्थागत रूप दिया गया था। यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है कि बौद्ध युग के आगमन के साथ नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला, बल्लभी, ओदंतपुरी, नादिया, अमरावती, नागहल्ला और सारनाथ जैसे शिक्षा के महान अंतरराष्ट्रीय केंद्र प्रमुखता में थे। बुद्ध काल में शिक्षा केंद्रों का विकास विहारों और संघों में हुआ।

बौद्ध दर्शन

बौद्ध दर्शन से अभिप्राय उस दर्शन से है जो भगवान बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा विकसित किया गया और बाद में समस्त एशिया में उसका प्रसार हुआ। 'दुःख से मुक्ति' बौद्ध धर्म का सदा से मुख्य ध्येय रहा है। कर्म, ध्यान एवं प्रज्ञा इसके साधन रहे हैं।

बुद्ध के उपदेश तीन पिटकों में संकलित हैं। ये सुत्त पिटक, विनय पिटक और अभिधम्म पिटक कहलाते हैं। ये पिटक बौद्ध धर्म के आगम हैं। क्रियाशील सत्य की धारणा बौद्ध मत की मौलिक विशेषता है। उपनिषदों का ब्रह्म अचल और अपरिवर्तनशील है। बुद्ध के अनुसार परिवर्तन ही सत्य है। पश्चिमी दर्शन में हैराक्लाइटस और बर्गसाँ ने भी परिवर्तन को सत्य माना। इस परिवर्तन का कोई अपरिवर्तनीय आधार भी नहीं है। बाह्य और आंतरिक जगत् में कोई ध्रुव सत्य नहीं है। बाह्य पदार्थ "स्वलक्षणों" के संघात हैं। आत्मा भी मनोभावों और विज्ञानों की धारा है। इस प्रकार बौद्धमत में उपनिषदों के आत्मवाद का खंडन करके "अनात्मवाद" की स्थापना की गई है। फिर भी बौद्धमत में कर्म और पुनर्जन्म मान्य हैं। आत्मा का न मानने पर भी बौद्धधर्म करुणा से ओतप्रोत हैं। दुःख से द्रवित होकर ही बुद्ध ने सन्यास लिया और दुःख के निरोध का उपाय खोजा। अविद्या, तृष्णा आदि में दुःख का कारण खोजकर उन्होंने इनके उच्छेद को निर्वाण का मार्ग बताया।

प्रक्रिया की विधि

यह अध्ययन प्रकृति में दार्शनिक और ऐतिहासिक है। तो वर्णनात्मक विधि का उपयोग किया जाएगा। अन्वेषक ने महात्मा बुद्ध के शैक्षिक विचारों से संबंधित प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों का उपयोग किया। यह अध्ययन पूर्णतः पुस्तकालय कार्य पर आधारित

उद्देश्यों

अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार थेः

1. महात्मा बुद्ध द्वारा शौक्षिक दर्शन में शांति शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालना।
2. महात्मा बुद्ध के सामान्य दर्शन का अध्ययन करना

अध्ययन की आवश्यकता तथा महत्व

बौद्ध शिक्षा दर्शन मानव के उत्थान हेतु मानव मूल्यों को जाग्रत करने में तथा मानव मूल्यों की स्थापना करने में सक्षम है। भारतीय जीवन दर्शन का मूलाधार चार तत्व है। बौद्ध दर्शन भी इन चारों में अद्‌भुत समन्वय स्थापित करता है, धर्म तो जीवन का विशिष्ट व्यवहारिक तत्व है। जो व्यक्ति बिना किसी अहित एवं बिना किसी को कष्ट पहुँचाये जीवन व्यतीत करता है वही सच्चे अर्थो में धर्म का पालन करता है उसी को धार्मिक कहा जाता है। बौद्ध दर्शन के अन्तर्गत धर्म को नैतिक आचारपरक संहिता के रूप में मान्यता प्रदान की गयी है। अर्थ तथा काम को बौद्ध दर्शन मर्यादाओं के भीतर स्वीकार्य करता है। इससे बौद्ध शिक्षा के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को महत्व दिया गया है। मोक्ष तो बौद्ध दर्शन का परम लक्ष्य माना गया है। भगवान ने मोक्ष के मार्ग की खोज हेतु अपना जीवन व्यतीत कर दिया, बुद्ध का मोक्ष मार्ग समस्त मानव के लिए था।

समकालीन पद्धति में पाश्चात्य शिक्षा दर्शन से सम्बन्धित सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, वहीं दूसरी ओर वैदिक कालीन पर अनुसंधान अनुसंधानकर्ताओं ने खास जोर नहीं दिया यद्यपि वर्तमान एंव पूर्व दशकों में इस दिशा में शोध कार्य आरम्भ तथा सम्पन्न हुए है। अरविन्द, राधाकृष्णन, विवेकानन्द, गांधी, टैगोर आदि दार्शनिकों के जीवन तथा विचार दृष्टिपात एवं विश्लेषण अनेक शोध ग्रन्थों में मिलता है, अनेक अनुसंधानकर्ता प्रायः यह भ्रान्ति धारण किये रहते है कि ज्ञान का स्वरूप प्राचीन शिक्षा प्रणाली में परिलक्षित होता है। वास्तविकता तो यह है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान दर्शन एवं वैदिक ज्ञान प्रणाली दोनो ही पृथक एवं स्वतंत्र विषय है, इस दिशा में अनुसंधानों में अपर्याप्त कार्य ही इस भ्रान्त धारणा का प्रमुख कारण है। अतएव प्राचीन ग्रन्थों में भारतीय शिक्षा दर्शन सम्बन्धी तथ्यों के वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध विवेचना तथा शोधकार्यो की महती आवश्यकता है।

भारतीय ज्ञान का स्वरूप से सम्बन्धित सामग्री महाकाव्यों, धार्मिक ग्रन्थों, पुराणों, बौद्ध एवं जैन ग्रंथों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इन पर क्रमबद्ध विश्लेषणात्मक अनुसंधानों की आवश्यकता है। भारतीय बौद्ध कालीन शिक्षा पद्धति अत्यन्त प्राचीन है गौरवमयी है जिस कारण आज भी समकालीन स्वरूप में अप्रत्यक्ष रूप से यत्र–तत्र परिलक्षित होती है। अतएव समकालीन भारतवर्ष की शिक्षा में व्याप्त अव्यवस्थाओं एवं दोषों की समाप्ति हेतु यह परमावश्यक है कि प्राचीन भारतीय बौद्ध शिक्षा दर्शन का सर्वांगीण अवलोकन किया जाए। वर्तमान शिक्षा को धर्म, संस्कृति दर्शन, नैतिक मूल्यों, जीवन मूल्यों तथा आध्यात्मिक आदर्शो से युक्त करना होगा और इसकी निरन्तरता को स्थापित करना होगा।

विश्व शांति प्राप्त करने के लिए बौद्ध विचार

बौद्ध धर्म सिखाता है कि चाहे हमारे पास वैश्विक शांति हो या वैश्विक युद्ध हर पल हम पर निर्भर है। स्थिति निराशाजनक और हमारे हाथ से बाहर नहीं है। हम कुछ नहीं करेंगे तो कौन करेगा? शांति या युद्ध हमारा निर्णय है। बौद्ध धर्म का मूल लक्ष्य शांति है, न केवल इस दुनिया में शांति बल्कि सभी दुनिया में शांति। बुद्ध ने सिखाया कि शांति के मार्ग पर पहला कदम शांति के कार्य–कारण को समझना है। जब हम समझते हैं कि शांति का कारण क्या है, तो हम जानते हैं कि

हमारे प्रयासों को कहां निर्देशित करना है। दूसरे शब्दों में, हम शांति की तलाश में कई ऐसे कदम उठा सकते हैं जो मददगार हो सकते हैं। लेकिन अगर हम पहले मूलभूत मुद्दों का समाधान नहीं करते हैं, तो अन्य सभी कार्य निष्फल हो जाएंगे।

बुद्ध ने सिखाया कि शांतिपूर्ण दिमाग शांतिपूर्ण भाषण और शांतिपूर्ण कार्यों की ओर ले जाते हैं। यदि जीवों के मन में शांति है, तो दुनिया में शांति होगी। इसलिए दुनिया के बारे में बुद्ध की दृष्टि को सबसे पहले देखना संभव है, जिसमें इसके संचालन की कार्य–कारणता भी शामिल है। अंत में, समस्या की प्रकृति और उसके समाधान को समझने के लिए एक बौद्ध सैद्धांतिक ढांचा विकसित करने के बाद, हम हर जगह शांति बनाने के लिए ठोस अनुप्रयोगों की खोज में बुनियादी सिद्धांतों को लागू करने का प्रयास कर सकते हैं जिसे हम वास्तव में अपने दैनिक जीवन में व्यवहार में ला सकते हैं।

अष्टांग मार्ग

अष्टांग मार्ग भगवान बुद्ध की प्रमुख शिक्षाओं में से एक है जो दुखों से मुक्ति पाने एवं तथ्य–ज्ञान के साधन के रूप में बताया गया है। अष्टांग मार्ग के सभी 'मार्ग' , 'सम्यक' शब्द से आरम्भ होते हैं (सम्यक = अच्छी या सही)। बौद्ध प्रतीकों में प्रायः अष्टांग मार्गों को धर्मचक्र के आठ ताड़ियों (spokes) द्वारा निरूपित किया जाता है।

बौद्ध धर्म के अनुसार, चौथे आर्य सत्य का आर्य अष्टांग मार्ग है – दुःख निरोध पाने का रास्ता। गौतम बुद्ध कहते थे कि चार आर्य सत्य की सत्यता का निश्चय करने के लिए इस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए :

- सम्यक दृष्टि : चार आर्य सत्य में विश्वास करना
- सम्यक संकल्प : मानसिक और नैतिक विकास की प्रतिज्ञा करना
- सम्यक वाक : हानिकारक बातें और झूठ न बोलना
- सम्यक कर्म : हानिकारक कर्म न करना
- सम्यक जीविका : कोई भी स्पष्टतः या अस्पष्टतः हानिकारक व्यापार न करना
- सम्यक व्यायाम : अपने आप सुधरने की कोशिश करना
- सम्यक स्मृति : स्पष्ट ज्ञान से देखने की मानसिक योग्यता पाने की कोशिश करना
- सम्यक समाधि : निर्वाण पाना और स्वयं का गायब होना

कुछ लोग आर्य अष्टांग मार्ग को पथ की तरह समझते है, जिसमें आगे बढ़ने के लिए, पिछले के स्तर को पाना आवश्यक है। और लोगों को लगता है कि इस मार्ग के स्तर सब साथ–साथ पाए जाते है। मार्ग को तीन हिस्सों में वर्गीकृत किया जाता है : प्रज्ञा, शील और समाधि।

बौद्ध भांति शिक्षा प्रणाली की विचारधारा

बौद्ध शिक्षा सांप्रदायिक संकीर्णता से मुक्त थी, केंद्रों में जाति, पंथ के आधार पर कोई पक्षपात नहीं था। बौद्ध शिक्षा ने नौसिखियों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास पर बहुत जोर दिया, आज भी शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का एकीकरण है जो व्यक्ति के विभिन्न पहलुओं को विकसित कर सकता है जो आपस में जुड़े हुए हैं। शारीरिक दंड पूर्णतः वर्जित थे जो शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य में भी बहुत सही है। बौद्ध दर्शन प्रत्यक्षवादी है और इसमें विचारों का सावधानीपूर्वक तार्किक व्यवस्थितकरण है। यह नैतिक है, निर्वाण का अष्टांगिक मार्ग एक सार्वभौमिक अपील करता है। यह लोकतांत्रिक है क्योंकि यह जांच की स्वतंत्रता में विश्वास करता है। शिक्षण संस्थानों को चलाते समय लोकतांत्रिक और गणतांत्रिक प्रक्रियाओं का पालन किया गया। बौद्ध धर्म की सभी तकनीकें अच्छे आचरण को विकसित करने के लिए दिशा प्रदान करती हैं और जो शिक्षा की एक ध्वनि प्रणाली का सार भी है।

बौद्ध शिक्षा ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय महत्व हासिल करने में मदद की। इसने भारत और दुनिया के अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान भी विकसित किया। विद्वानों के अंतर्राष्ट्रीय आदान–प्रदान ने दूर–दूर से छात्रों और विद्वानों को आकर्षित किया। नैतिक होने के लिए व्यक्ति को नेक मार्ग का अनुसरण करना चाहिए, जैसा कि बौद्ध धर्म में प्रचारित अष्टांगिक मार्ग नैतिक शिक्षा और शांति के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है। बौद्ध धर्म की पूरी तकनीक अच्छे आचरण को विकसित करने के लिए दिशा प्रदान करती है जो शिक्षा की ध्वनि प्रणाली का सार भी है। पाठ्यक्रम में धर्मनिरपेक्ष के साथ–साथ धार्मिक विषय भी शामिल हैं। इस अवधि के दौरान स्थापित विश्वविद्यालय अभी भी एक मार्गदर्शक शक्ति के रूप में कार्य कर रहे हैं। नालंदा और बल्लभ विश्वविद्यालय का संगठन उन्नत था कि यह आज तक विश्वविद्यालय के संगठन और संरचना को प्रभावित करता है। उच्च शिक्षा के लिए न्यूनतम आयु निर्धारित करने, नियमों का एक सेट प्रदान करने और प्रवेश के लिए परीक्षा देने की प्रणाली आज भी शैक्षिक संरचना का मार्गदर्शन कर रही है। एक सामाजिक संस्था के रूप में शिक्षा को बौद्ध शिक्षा प्रणाली के परिणामस्वरूप अस्तित्व मिला। एक महत्वपूर्ण योगदान इस काल की विभिन्न व्यावहारिक विषयों में शिक्षा प्रदान करना है, एक परंपरा जो आज भी कम हो गई है। यह इस अवधि में था कि सामूहिक शिक्षण की पद्धति और एक ही संस्थान में कई शिक्षकों की उपस्थिति विकसित हुई थी।

ज्ञान की अवधारणा

बौद्ध धर्म में ज्ञान प्रमुख चीज है। अन्य धर्मों में हम पाते हैं कि आस्था सर्वोपरि है। और भी अन्य धर्मों में, हम पाते हैं कि ध्यान सर्वोच्च है, उदाहरण के लिए योग में। बौद्ध धर्म में, विश्वास प्रारंभिक है, ध्यान महत्वपूर्ण है। बौद्ध धर्म का वास्तविक हृदय ज्ञान है। बुद्धि के ताने–बाने में अध्ययन के माध्यम से सीखे गए विचारों और सिद्धांतों को व्यवस्थित रूप से काम करने से बुद्धि उत्पन्न होती है, जिसके लिए गहन चिंतन, बुद्धिमान चर्चा और गहन जांच की आवश्यकता होती है।

यह ज्ञान है कि बुद्ध ने अंतिम मुक्ति के प्रत्यक्ष साधन के रूप में, मृत्युहीन के लिए द्वार खोलने की कुंजी के रूप में, और जीवन की सांसारिक चुनौतियों का सामना करने में सफलता के लिए अचूक मार्गदर्शक के रूप में भी धारण किया। इस प्रकार ज्ञान बौद्ध शिक्षा की संपूर्ण प्रणाली का मुकुट और शिखर है, और बौद्ध शिक्षा प्रणाली में सभी प्रारंभिक कदम इस सर्वोच्च गुण के फूलने की दिशा में तैयार किए जाने चाहिए। यह इस कदम के साथ है कि शिक्षा पूर्णता तक पहुंचती है, कि यह सबसे सच्चे और गहरे अर्थों में रोशनी बन जाती है, जैसा कि बुद्ध ने अपनी जागृति की रात में कहा थाः "मुझ में दृष्टि, ज्ञान, ज्ञान, समझ और प्रकाश उत्पन्न हुआ।"

सामायिक परिवेश और बौद्धकालीन भांति शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा विकास का वह क्रम है, जो अनेक प्रकार से अपने लौकिक, सामाजिक और पारलौकिक एवं सन्यासी जीवन से शनैः–शनैः सामंजस्य स्थापित करता है तथा अपने आप पर नियन्त्रण करता है। अपने व्यवहारों में परिवर्तन लाता है, तब कालक्रम में उनके पूरे सामाजिक ढांचे में अमूल परिवर्तन हो जाता है। निर्माण का यह क्रम स्थिर नहीं, अपितु गतिशील है। विद्या प्राप्त करने के वजह से ही अनुभवशील व्यक्ति का समाज में दूसरे व्यक्तियो की तुलना में ज्यादा आदर होता है और वह विज्ञान एवं अनुभवी महापुरुषों के विचारों को शीघ्रता तथा सरलता से अनुग्रहीत करता है। इसके द्वारा मानव के भावी जीवन की दिशा तथा समाज की संरचना मूलतः निर्मित होती है। शिक्षा संरचना ज्ञान की तथा और ज्ञान के स्वरूप का समुच्चय है, जो सैद्धान्तिक है। व्यवहारिक दृष्टि से शिक्षा औपचारिक, अनौपचारिक और औपचारिकता से परे उस संरचना क्रम को बनाती है, जिसमें एक शिक्षार्थी ज्ञान, कुशलता, नैतिकता, मूल्य और वैयक्तिक तथा सामाजिक अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण दिशा निर्देश प्राप्त करता है।

वर्तमान शैक्षिक स्वरुप में, शिक्षा के हालात पर नजर डालने पर मालूम होता है कि देश विशेष की राजनीति और राजनैतिक दर्शन शैक्षणिक व्यवहार जगत के उद्देश्यों को व्यवस्थित करता है। राष्ट्रीय हित की पूर्ति के लिए जिन कार्यक्रमों की जरुरत होती है, उनके निर्देशन के लिए शैक्षणिक कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्थापित करना जरूरी है। इसमें आधुनिक शिक्षा वर्तमान जरुरतो के मुताबिक करने में पूर्णतः सफल नहीं हो पा रही है, जिसके दुष्प्रभाव मानवीय सम्बन्धों में सैद्धान्तिक और व्यवहारिक दोनों संदर्भों में सर्वाधिक अभिव्यक्त होते हैं। मानव विकास ज्ञान प्रक्रिया का मूलआधार रहा है।

इस शिक्षण व्यवस्था के अध्ययन करने से मालूम होता है कि बौद्धकाल के शिक्षा–दर्शन की उपादेयता सदैव बनी रहेगी। इस दर्शन का लक्ष्य आज के शिक्षा के समान नही है। बौद्ध समय में भी शिक्षार्थी के विकास को प्रयत्न होता था। तथा संस्थाएँ स्वतंत्र रूप से अध्ययन–अध्यापन कार्य करती थीं तथा बालक को श्रेष्ठ अनुभव देने का प्रयत्न करती थीं। बालकों को ऐसे आचरण की सीख दी जाती थी जिससे उसके मस्तिष्क को स्थिरता व शान्ति प्राप्त हो सके। बौद्धकालीन शिक्षा में शान्ति, अहिंसा व वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धान्त तथा प्रजातान्त्रिक संगठन की प्रवृत्ति निहित थी।

बौद्धकाल में धर्म शिक्षा का मेरूदण्ड था। धर्म तथा आध्यात्मिक रूचि के वजह से शिक्षा का लक्ष्य धार्मिक पवित्रता, आत्म विकास तथा आत्मज्ञान या आत्मबोध माना गया था। तथागत द्वारा प्रतिपादित आष्टांगिक मार्ग शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों में है। कालान्तर में बौद्ध शिक्षा स्वरुप में जो नवीन और व्यवहारिक उद्देश्यों को स्थान मिला (नैतिक जीवन, व्यक्तित्व का उन्नयन, संस्कृति संरक्षण, धर्म व आध्यात्मिक संरक्षण) वे छात्र के लिए अत्यन्त उपयोगी थे तथा आज भी शिक्षा के संगत उद्देश्य माने जाते हैं। इन्हीं उद्देश्यों से बौद्धकालीन शिक्षा पद्धति आदर्श बन गयी। समस्त सांसारिक बन्धन मनुष्य को गुलाम बनाते हैं। इसका लक्ष्य व्यक्ति को समस्त सांसारिक बन्धनों से मुक्त कराना है। 'सकीरा' ने लिखा है कि– ''धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं में अब निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। भौतिकवादी प्रवृत्ति प्रबल हो रही है। शिक्षा को आज लौकिक और व्यवहारिक दोनों होना चाहिए।

निष्कर्ष

महात्मा बुद्ध का दर्शन मानवता का दर्शन माना जाता रहा है. आज अगर हम कहीं भी विश्वशांति, नैतिक प्रगति, मूल्ययुक्त जीवन की बात करते हैं तो बुद्ध की शिक्षाओं का वर्णन जरूत करते हैं. बुद्ध का दर्शन आधारभूत रूप में नैतिक दर्शन है और यही विशेषता उसे अन्य दर्शनों से अलग स्वरूप देती है. इसके इसी स्वरूप की वजह से यह दर्शन भारत में जन्म लेकर भी विश्व–पटल पर अपनी पहचान बना चुका है. बौद्ध दर्शन को हम प्रेम और करुणा का दर्शन भी कह सकते हैं। "बौद्ध धर्म में इन गुणों को विकसित करने के लिए अनेक तरीके सिखाए जाते हैं, और कोई भी व्यक्ति इनसे लाभान्वित हो सकता है. सभी की समानता प्रेम और करुणा का आधार है: सभी जीवन में सुख चाहते हैं; कोई भी दुख नहीं चाहता। सभी आनन्दित रहना पसन्द करते हैं। कोई भी दुखी नहीं रहना चाहता। इस दृष्टि से हम सभी एक जैसे हैं।

बौद्धों ने सभी लोगो को नियमों के अनुसरण करने का उद्देश्य दिया है और इसी को वे अनुशासन कहते हैं। बौद्धों की अनुशासन सम्बन्धी यह अवधारण आज लोकतन्त्रीय जीवन के लिए बड़ी आवश्यक है। लिंग, धर्म, आयु, व्यवसाय या राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना, बौद्ध शिक्षा प्रणाली सभी के लिए है। हर कोई बौद्ध धर्म सीख सकता है और उसका अभ्यास कर सकता है, क्योंकि यह परम, पूर्ण ज्ञान की शिक्षा है। विश्व के सभी भागों में बुद्ध की शिक्षा की आवश्यकता है। हालांकि, बौद्ध शिक्षकों का पालन–पोषण करना आसान नहीं है। कठिनाई इस तथ्य में निहित है कि अधिकांश लोग अपनी सांसारिक प्रसिद्धि और धन का त्याग नहीं कर सकते हैं, जो बौद्ध धर्म को सीखने और अभ्यास करने में प्रमुख बाधाएं हैं। शुद्ध मन के बिना, बुद्ध की शिक्षाओं को वास्तव में समझने और इस दुनिया की सभी समस्याओं के कारणों को समझने का कोई तरीका नहीं है। इस बीच, गुणों और अच्छे कारणों और शर्तों के आधार पर, अभ्यासियों को अच्छे शिक्षक नहीं मिल सकते हैं। इसलिए, मैं हमेशा युवा चिकित्सकों को हमारे देश और दुनिया को बचाने के संकल्प के लिए प्रोत्साहित करती हूं।

सन्दर्भ

- पाण्डेय, डॉ0 गोविन्द चन्द्र, (1973). बौद्धधर्म के विकास का इतिहास हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उ0प्र0 लखनऊ, पृष्ठ 213।
- उपाध्याय, भरतसिंह, (2011). बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीयप्रकाशक, हिन्दी मण्डल वि0 सं0 पृष्ठ 67।
- आचार्य नरेन्द्रदेव, (2013). बौद्धधर्म दर्शन बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, वि0सं0 पृष्ठ 124।
- राय, राम कुमार, (1969). बौद्ध न्याय, भाग–1 व 2 चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, पृष्ठ 156।
- उपाध्याय, बलदेव, (1966). भारतीय दर्शन शारदा मंदिर, वाराणसी, पृष्ठ 12।
- सिंह, बी0एन0, (1986). बौद्धधर्म एवं दर्शन आशा प्रकाशन, सदानन्द बाजार, वाराणसी, पृष्ठ 82।
- हिरियन्ना, (1965). भारतीय दर्शन की रूपरेखा अनुवादक भट्ट, गोवर्धन, राज कमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 72।
- बोधिसत्वभूमिवसुबन्धु, (1996). तिब्बती तंजूर जापानी संस्करण, पृष्ठ 172।
- ओड़, एल.के. (1988). शिक्षा के नूतन आयाम, हिंदी ग्रन्थ अकादमी, राजस्थान, पृष्ठ 19।
- अजहन अन्नारो (2011), लापता शांति की खोज, अमरावती बौद्ध मठ।
- ब्रोंखोर्स्ट, जोहान्स (2007), ग्रेटर मगध, स्टडीज द कल्चर ऑफ अर्ली इंडिया। सीरीजः ओरिएंटल स्टडीज की हैंडबुक, सेक्शन 2 साउथ एशिया सीरीज, ब्रिल एकेडमिक पब्लिशर्स इंक,
- बसवेल, रॉबर्ट ई. (सं.) (2004), बौद्ध धर्म का विश्वकोश, मैकमिलन संदर्भ पुस्तकें, कैरिथर्स, माइकल (1983), द बुद्धा, ऑक्सफोर्ड (इंग्लैंड); न्यू योर्क, ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस,